सत्य की अमेरिकन मुर्गी

ःःःइस तरह पैंतीस वर्ष गुजरने को आये।पिछले वर्ष सत्य का एक पत्र मुझे मिला था।साथ मे एक फोटो भी था।सत्य अपने ऑफिस मे बैठा अपने कामों मे तल्लीन है।अचानक मेरी नज़र उसके कम्प्यूटर पर पड़ी.जिस पर माचिस की एक डिबिया रखी मिली।उस पर चिड़ी के गुलाम का छापा है।मुझे एक पल भी नही लगा अपने और सत्य के बचपन की तरफ लौटने मे।इस माचिस के डिबिया को मै भली भॉति जानता था।

मेरा नाम भरथू मॉझी है।सत्य मेरे बचपन का दोस्त है।दूसरे लोगों की तरह वो भरथा.या भरथवा कहके मेरा नाम नही बिगाड़ा।वो मुझे भरत कहके पुकारा करता था।उससे मेरा सक्रिय साथ हायर सेकेन्ड्री तक रहा।शायद ही ऐसा कोई दिन रहा होगा.जब हम एक दूसरे से न मिले हों।हायर सेकेन्ड्री के बाद हमारे रास्ते अलग अलग हो गये।मुझे अपने भाग्य और परिस्थितियों से जूझना पड़ा और उसे अपने संक्रमणों से।वो बन्धनो से बेहद घबराता था.जो उसकी मॉ आज भी नही समझ पाई हैं।वो उसे जितना बॉध कर रखना चाहीं.वो उतना ही उश्रृंखल होता चला गया।वो जितना भी प्रतिबन्ध उस पर लगाना चाहीं.वो उतना ही बागी बनता चला गया।दुनिया के सारे घोड़े रथों मे नही जोते जा सकते।कुछ ऐसे भी होते हैं.जो अपनी रासें खुद ही रखते हैं।सत्य भी अपनी रास खुद अपने हॉथों मे रखना चाहता था।वो हम सबको छोड़ कर मास्को चला गया।आज के दिनो मे वो जर्मनी मे है।जिस तरह वो धनबाद मे लोगों के सुख दुख मे शरीक रहता था.वैसे ही वो बाद के दिनो मे भी रहता है।उसके चरित्र का ये पक्ष उससे नही छीना जा सकता।यही वजह है कि उसे दोस्तों की कहीं भीं कमी नही रही।उसके जाने के बाद धनबाद मे मेरे कई मित्र बने.पर उस जैसा मित्र मुझे दुबारा नही मिला।एक बार उसी ने कहा था कि भरत!दोस्ती मेरे मन पर ईश्वर की लिखी एक अमेट कविता है जिसे मेरा मन दिन रात गुनगुनाता रहता है।इसके ईर्द गिर्द मेरी तमाम भावनायें भॅवरे की तरह मंडराती रहती हैं.मुझे आज भी अच्छी तरह याद हैं।

धनबाद के उच्च बुनियादी विद्यालय जगजीवन नगर मे हम साथ साथ पढा करते थे।ये तीसरी कक्षा की बात है।हमारी कक्षायें धूल धूसरित दरियों पर लगा करती थी।वो सदैव पहली पंक्ति मे बैठा करता था।पिछली पंक्तियों मे मुझ जैसे अछूत और अनुसूचित जाति के लडके बैठा करते थे.जो स्कूल कुछ सीखने की जगह सिर्फ अपनी कान उखड़वाने या फिर पुटूस की कॅटीली छड़ियों से मार खाने आते थे।एक दिन क्लास मे न जाने क्या सोच कर वो उठा और आ कर मेरी बगल मे बैठ गया।ये हमारी मित्रता का बीजारोपण था।

कर्म के आधार पर हमारे देश मे जिन जातियों या उपजातियों का जन्म हुआ.उन्हे परे रखते हुए मै सिर्फ दो जातियों की बात करने जा रहा हूँ।ये दो जातियॉ आदि काल से चली आ रही हैं और इस सृष्टि के अन्तिम दिन तक टिकी रहेंगी।ये दो जातियॉ हैं समर्थो और असमर्थों की.अमीरो और गरीबों की।मै असमर्थ तो नही था.पर अपेक्षाकृत गरीब अवश्य था।हमारी कक्षा मे मुझ जैसे या फिर हमसे भी गरीब कई लड़के थे।टेरीकॉट पहने लड़को पर हमारे टीचर्स छड़ी बरसाने से घबराते थे।छड़ी बरसती थी.हमारे फटे पुराने जंघियों पर।

टिफिन मे जब अच्छे घरों के लडके अपने बैगों से अपनी रंग बिरंगी टिफिनबॉक्सें निकालते थे.तब उनसे टकराने वाली किरणें स्कूल के प्रांगण मे तत्काल इधर उधर की दीवारो पर इन्द्रधनुष खींच दिया करती थी।हमारी झोलियों मे रात की बासी रोटियॉ पड़ी होती थीं।जब तब मेरा मन मन म्लान हो उठता था।टिफिन मे हमारे संग कोई ऊॅची जात का लड़का बैठना ही नही चाहता था।स्कूल मे यहॉ तक कि हमारे नलके भी अलग थे।हमे अबे साले कहके पुकारा जाता था।चोर.चमार और जन्गली हमारे उपनाम थे।

जब पहली बार सत्य मुझे अपने संग टिफिन मे साथ आने को कहा.तो मुझे अपनी कानों पर सहज विश्वास ही नही हुआ।हम दूसरे लड़कों से दूर जरा हटकर बैठे।एक गहरे लाल रंग के टिफिनबॉक्स मे उसकी मॉ ने उसे अंडों के दो सैन्डवीच दे रखे थे और मेरे झोले मे भइर्या की एक गमछी मे बॉधी दो बासी रोटियॉ थीं।मुझे बड़ा संकोच हो रहा था उन्हे बाहर निकाल कर खाने मे।

तभी वो पूछ बैठा

ःक्या बात है!नाश्ता लाना भूल गये क्या!मेरी खा लो।आज मुझे भूख नही है।इससे सुन्दर कविता मैने अपने जीवन मे दुबारा नही सुनी।बिन चाहे मेरी ऑखों से टप टप करके ऑसू बह निकले।

स्कूल मे उसे दोस्तों की कोई कमी नही थी।सभी उसकी दोस्ती को लालायित रहते थे.पर पता नही उसने मुझमे क्या पाया और मुझे एक दोस्त का दर्जा दिया।

उसे उसके घर का एक नौकर सायकल से स्कूल छोड़ने आया करता था।वही उसे समय से आकर घर भी लिवा जाता था।मै पैदल ही स्कूल जाया करता था।एक दिन टिफिन मे वो कहने लगाःकल से हम साथ साथ स्कूल आया जाया करेंगे।

दूसरे दिन वो मुझे दूर से ही पोस्टऑफिस के सामने मेरा इन्तजार करते दिखा।सुबह के पौने छ बज रहे थे।मै अनायास दौड़ने लग पड़ा।अब हम पैदल साथ साथ स्कूल जाने लगे।सुबह ठीक पौने छ बजे वो पोस्टऑफिस के सामने मेरे इन्तजार मे खड़ा दिखता था।कैम्पस के मेनगेट की दॉई तरफ से भी एक रास्ता हमारी स्कूल तक जाता था।इसे हम कुत्ता वाला रास्ता कहा करते थे।इसी रास्ते हम घर वापस भी आया करते थे।रास्ते मे कपूर साहब की कोठी पड़ती थी।उसके अहाते मे एक जलेबी का पेंड़ हुआ करता था।इस पेंड़ की कुछ डालियॉ अहाते के बाहर झॉका करती थीं।बिना नागा के हम इन डालियों पर पत्थर फेंका करते थे।डालियों पर की लगी जलेबियॉ पूर्व वत डालियों पर लगी रहती थीं।अगर कभीं कोई जलेबी किस्मत से गिर गई.तो मै उसे सत्य को ही दे दिया करता था।सच तो ये है कि मेरे पत्थरों से जब भी जितनी भी जलेबियॉ गिरीं.उन्हे मैने सत्य को दे दिया।उन्हे मै कभीं चखना ही नही चाहा।सत्य के फेके ज्यादेतर पत्थर कपूर साहब के ऑगन मे ही गिरते थे।कभीं कभीं हम पाई साहब के कोठी के पिछवाड़े से होकर चौकीदार क्वाटर्स होते हुए कारखाने तक आते थे।वहॉ से बॉई तरफ का रास्ता क्लर्कस क्वार्टर की तरफ और दॉई तरफ वाला रास्ता धईया की ओर जाता था।इसी धईया गेट पर सत्य रहा करता था।ठंढ के दिनो मे पाई साहब के कोठी के पिछवाड़े लगे बैर पके होते थे।मै उन्हे तोड़ कर सत्य का पूरा थैला ही भर देता था।उसे ये बैर अपने भाई बहनों के बीच बॉटने होते थे।बिना किसी नागा के सत्य हर रोज शाम को मुझसे मिलने आया करता था।मेरे पास एक बॉस की चारपाई हुआ करती थी।उस पर मै सोता भी था.पढता भी था.आने वालों को

बिठाता भी था। दो जोड़ी कपड़े जो मेरे पास थे. मेरे बिस्तर पर ही किताब कॉपियों के संग बिखरे पड़े रहते थे। सत्य उन्हे समेटने से मना करके मुझे बाहर लिवा जाता था। हमारी कॉलनी मे सड़क के किनारे कई सिमेन्टदार बैंचे बनी हुई थी। इन्ही मे से किसी खाली बैंच पर हम जा बैठते थे। बिना लाग लपेट के कहने लगता था भरत! अपने कपड़े लत्ते तो साफ रखा करो न। तुमसे गले मिलते ही मुझे उबकाई सी आती है। तुम अपनी गन्दगी की वजह से कक्षा मे अछूत माने जाते हो। तुम्हारे साथ कोई बैठना तक नही चाहता।

ः तुम्हारी तरह मेरे पास कपड़ों की सैकड़ों जोड़ियॉ थोड़े ही हैं. जो रोज बदल बदल कर पहना करूँ।

ः दो जोड़ियॉ तो हैं न! एक को पहनो और दूसरे को साफ रखा करो! नहाने धोने से मन भी साफ रहता है।

उसे मेरी धनबादी हिन्दी से भी बड़ी घबराहट होती थी। उसे सुधारने बैठ जाता था। मै उसके कहे का कभीं बुरा नही मानता था।

सत्य को किसी बात की कमी न थी। उसके पास सब कुछ था। मेरे पास कुछ नही था। अगर कुछ था. तो वो भईया का स्नेह था। वो मेरे लिए एक बहुत ही बड़ा सम्बल था। सत्य पर भी वो बड़ा स्नेह रखते थे। सत्य भी मिलने पर उनके पॉव ही छूता था। भईया गदगद हो जाते थे।

मुझे सत्य का भी बड़ा सम्बल था।

शुरू शुरू मे मेरे और सत्य की मित्रता का कई दिशाओं से विरोध हुआ। उसकी मॉ जो आज मुझे अपने सगे बेटे की तरह मानती हैं. शुरू मे वो भी इस मित्रता के खिलाफ थीं। जब मै पहली बार सत्य से मिलने उसके घर गया था. तो मुझे एक चनके प्लेट मे नाश्ता आया था। मेरे चाय के कप की हैन्डल भी गायब थी। इस तरह के बर्त्तन सत्य की मॉ ने मेश्तर जमादारों के लिए रख छोड़ा था। मना करने के बावजूद सत्य बड़ा हो हल्ला मचाया। आन्गन वाले कमरे के एक ताखे पर इस तरह के बर्त्तन पड़े थे। सब जाके तोड़ आया और अपने मॉ को घर छोड़ने की धमकी तक दे आया। सत्य की नजरों मे मित्रता ही मेरी जाति थी। मेरा चरित्र ही मेरा परिचय था।

स्कूल के दिनो मे मुझ जैसे कई लड़कों को जो एकीकरण मिला. वो सत्य की वजह से ही मिला। इन बातों के लिए कई लड़को और टीचरों से उसका झगड़ा भी हुआ।

वो हमारी कक्षा का सबसे मेधावी लड़का था। खेलने कूदने से लेकर दूसरे सांस्कृतिक गतिविधियों मे वो हम सबसे आगे था। जब हम सातवीं कक्षा मे आये. तब श्री गोखला नन्द झा हमारे प्रधानाध्यापक बन कर आये। उसी वर्ष हमारे स्कूल मे कूल सातों क्लासों के लिए एक चीफ मौनीटर का चुनाव हुआ था। बड़ी मुश्किल से सत्य को राजी किया गया। उसके विपक्ष मे हमारे ही क्लास की एक लड़की खड़ी हुई थी। जब नतीजा निकला. तो उस लड़की को मात्र तीन मत मिले थे। बाकी सारे सत्य को मिले थे। वो हम सबका प्रिय था। उसे सभी मानते थे।

मिडिल स्कूल के फाईनल इम्तहान मे डंके की चोट पर वो प्रथम श्रेणी पाया और हमारे विद्दालय का नाम रौशन किया। विदाई के दिन हमारे क्लासटीचर श्री बनारसी प्रसाद जी ने कहा था कि सत्य पर हमारे स्कूल को नाज है। उसकी मॉ के तो जमीन पर पॉव ही नही पड़ते थे। उसके पिताजी गर्व से फूले न समाते थे। मै किसी तरह पास होकर भईया से अपने कान ही उखड़वाया थाः नालायक उल्लू कहीं का। इतने मेधावी लड़के का साथ पाने के बावजूद इतने कम अंक पाया है। दिन भर खटिये पर बैठा पैरों के मैल छुड़ाता रहता है।

सत्य से मेरी जो भी मदद की जा सकती थी. वो किया। रोज शाम को मुझे पढाने आ जाता था। उसका वश चलता तो अपना दिमाग निकाल कर मेरे सिर मे फीट कर देता। मॉ शारदा ने दूसरे देवी देवताओं की तरह न जाने क्यों मेरा परिष्कार कर रखा था! सर मे कुछ घूसता ही न था।

खैर सत्य से मेरा साथ बना रहा। मिडिल स्कूल के परिशर मे ही कुछ और कमरे बनवा कर वहॉ एक राजकीय उच्चतर विद्दालय खोला जा चुका था. जिसकी कक्षायें दस बजे से लगती थीं। करीब करीब हमारी पूरी कक्षा ही इस विद्दालय के आठवीं मे आ गई। कक्षा की लड़कियों को एक दूसरे और धनबाद के एकमात्र कन्या विद्दालय मे जाना पड़ा।

इसी बीच सत्य मे एक अजीब सा परिवर्त्तन आया। वो यकायक बेहद चुप रहने लगा। जरूरत के अलावे वो कुछ बोलता ही नही था। उसे सदैव एक अकेलेपन की तलाश रहती थी। मै उससे पूछ पूछ कर हार गया. पर अगर कोई कारण होता. तब न वो बताता!

उसने तमाम सांस्कृतिक गतिविधियों से अपने हॉथ खींच लिये। यहॉ तक कि पर्व तयौहारों मे भी उसकी रूचि नही रही। होली मे वो सुबह ही सुबह आस पड़ोस के लड़कों को जमा करके उनके संग कनस्तर पीटता मेरे मुहल्ले मे आ धमकता था। उसके वार्निश वाले रंग तो उतरने का नाम नही लेते थे। किरासन तेल इस्तेमाल करना पड़ता था। गालों पर बड़ी जलन होती थी। दिवाली के दिन वो दोपहर मे ही छत पर चढ कर अपने भाई बहनों के संग मोमबत्ती गाड़ने लग जाता था। छठ मे सूर्योदय से पहले ही धईया के राजा तालाब जा पहुँचता था। इस बार होली के दिन उसने दिन भर अपने आप को अपने कमरे मे बन्द कर लिया था। बाहर निकला ही नही। मॉ को कह दिया कि उसकी तबीयत ठीक नही है। शाम को मै ही थोड़ा सा अबीर लेकर उससे मिलने गया था।

इसी तरह न जाने कितने त्यौहार इस वर्ष आये और गये. पर सत्य का उचाटपन नही टूटा। स्कूल के बाद घर आते ही वो अपने आप को अपने कमरे मे बन्द कर लेता था। जब तब टिफिन मे वो अपनी पढी किताबों का जिक्र किया करता था। मुझे सच कहूँ तो उसके कहे का एक अंश भी पल्ले नही पड़ता था। उसके कई शब्द भी मेरे पल्ले नही पड़ते थे। अपनी इस उम्र मे वो जयशंकर प्रसाद और महावीर प्रसाद द्विवेदी जैसे लोगों को पढने लगा था. जिनकी रचनायें बड़े बूढे भी अपनी हॉथों मे लेने से घबराते हैं। किताबों की दुनिया ही अब उसकी दुनिया थी. जिसका लाभ उठा कर कक्षा के कुछ लड़के छमाही मे उससे ज्यादे अंक प्राप्त कर बैठे। उसे इसकी कोई परवाह नही थी. परन्तु मुझे थी। सबसे ज्यादे उसके मॉ को थी। खूब डॉट पड़ी उसे घर पर। पढाई लिखाई की किताबों के अलावे दूसरी किताबों को छूना सख्त वर्जित कर दिया गया। नतीजा ये निकला कि जो थोड़ी बहुत उसकी रूचि पढाई मे थी. वो भी जाती रही। मै चाह कर भी उसे कुछ नही कह पाता था। मेरी अपनी उपलब्धि जो भी रही हो. लेकिन सत्य की उपलब्धि मेरी अपनी उपलब्धि थी। क्लास के वो लड़के जो छमाही मे सत्य से ज्यादे अंक पा गये थे. वो मुझे फूटी ऑखों नही सुहाते थे। मौका पाते ही मै उन्हे अकारण धकिया के आगे बढ जाता था।

एक दिन स्कूल के रास्ते वो मुझे बेहद खुश नज़र आया। पूछने पर बताने लगा कि अब बहुत जल्दी उसके पास अपना एक निजी मुर्गियों

का फार्म होगा।
ःफिर तुम देखना कि स्कूल मे मै कौन सा धमाका मचाता हूँ।
ःये फार्म की तुम्हे क्यों सूझी!
ःजानना चाहते हो!
ःहॉ!
ःतो सुनो।
ःजब भी हमारे घर पर नाश्ते पर आमलेट बनते हैं. तब पिताजी को एक अन्डे का आमलेट मिलता है और हमे आधे का।बड़े जतन से मॉ उसे तावे पर फैला कर उसका आधा करती हैं.फिर भी हमारे भाई बहन बहन दॉये वाला और बॉये वाला करके झगड़ बैठते है।बड़ी कोफ्त होती है मुझे।उन्हे मै इतने आमलेट खिलाऊँगा कि वो अन्डे का नाम सुन कर कॉपा करेंगे।
ःपर तुम्हारी मॉ कैसे राजी हुई!
ःउन्हे पिताजी ने राजी किया।कहने लगेःस्कूल के बाद दूसरे लड़के भी तो खेलने जाते हैं.दोस्तो से मिलने जाते हैं।कईयों के पास अपने कुत्ते भी हैं।अगर ये अपना समय अपनी फार्म मे बिताना चाहता है.तो बिताने दो उसे।
शायद पहली बार सत्य के पिता ने सत्य की मॉ को टोका था.वरना सभी बच्चों की शिक्षा दीक्षा का भार उसकी मॉ के हॉथों मे था।
हमारे मुहल्ले मे एक बंगाली परिवार रहता था।पति माईनिंग रिसर्च सेन्टर मे सिनियर साईन्टिस्ट थे और उनकी पत्नी लक्ष्मी नारायन महिला विद्दालय मे टीचर थीं।बड़ा ही सज्जन परिवार था।जब भी मिलते थे.बड़े प्यार से अपनी बन्गाली मिश्रित हिन्दी मे मेरा हाल चाल पूछा करते थे।अक्सर कहते थे कि किसी भी सबजेक्ट मे अगर दिक्कत महसूस हो.निर्भय हमारे पास आ जाना।साईन्स मै देख लूँगा .आर्टस दीपा देख लेगी।दीपा उनकी पत्नी का नाम था।उनके पति को मै दादा कहके बुलाता था।
फिर मै उन्हे बताता था कि सत्य के रहते मुझे कौन सी दिक्कत होनी है!
जब दीपा दी का गर्भ ठहरा.तो उनसे भारी काम नही हो पाते थे।दादा की विनती मुझसे नही टाली गई।मै उनके घर का हाट बाजार देखने लगा।शनिवार को जा कर सारे घर की सफाई भी कर दिया करता था।उनके बिस्तर वगैरह भी बदल दिया करता था।महीने के अन्त मे मुझे इनसे तीस रूपये मिलते थे।यदा कदा ये मेरे लिए कमीज.हाफपैंट या स्वेटर वगैरह भी खरीद दिया करते थे।इस परिवार मे मुझे बड़ा प्यार मिलता था।मै इनका ही नही.बल्कि और कई परिवारों की गाहे बगाहे मदद कर दिया करता था।दस पॉच रूपये मुझे उनसे भी मिल जाते थे।अपने मुहल्ले मे मै भले ही अच्छे विद्यार्थियों मे नही गिना जाता था.पर मेहनती ईमानदार और आज्ञाकारी अवश्य माना जाता था।दूसरे आलसी और निकम्मे बच्चों के बीच मेरे नाम का हवाला दिया जाता था।
हटिया बाजार के अलावे खाना भईया बनाते थे।बाकी दूसरे काम मेरे जिम्मे था।
सत्य के पिताजी की बड़ी पहुँच थी।सिर्फ उनका नाम लेकर हम सी पी डब्ल्यू डी के दास बाबू के यहॉ से ढेरों सिमेन्ट उठा लाये थे।कारखाने के बनर्जी बाबू से हमे कॅटीली तारें जालियॉ.लकड़ियॉ रंग और कीलें जैसी चीजें मिल चुकी थीं।शनिवार और रविवार को हम उसके एक नौकर के संग कैम्पस मे फेंके ईटें बटोरने जाते थे।जब जरूरत की तमाम चीजें जमा हो चुकीं.तब सत्य के फार्म का निर्माण शुरू हुआ।धईया के राजमिस्त्री यासीन और कारखाने मे काम करने वाले एक मजदूर सोना राम के निरीक्षण मे ये निर्माण कार्य एक सप्ताह तक चला।तीन पक्के दरबे बने.जिन्हे तार की जालियों का एक घेरा मिला।दरबे लाल रंग से रंगे गये।दरवाजों और खिड़कियों को हरे रंग से रंगा गया।जालियों के घेरे मे सत्य ने दो पेंड़ो के ठूँठ भी गड़वा कर उन्हे वार्निश से रंगवाये।खाने पीने के बर्त्तन और अंडे देने के बक्से तक रंगे गये।दरबो मे बरवा के सॉ मिल का बुरादा फैलवाया गया।उनमें मे बिजली के लट्टू लटकाये गये।सॉप बिच्छू चूहों और चिटियों की एक एक बीलें ठोक ठोक कर बन्द करवाई गई।किलो के हिंसाब से सत्य ने आस पड़ोस मे डीडीटी छिड़कवाया।
सत्य का उत्साह देखते ही बनता था।उसके चेहरे की मुस्कान वापस लौट चुकी थी।
जब सत्य को अपने पिताजी से सौ रूपये मिले.तो वो अपने एक नौकर करन के संग पुलिस लाईन के वैटनरी अस्पताल से संलग्न एक पाल्ट्री फार्म से दो दो महीने के बीस चूज्जे खरीद लाया।उसके फार्म मे बीस नये जीवन आये।उनकी अगवानी मे वो पहले से ही खाने पीने का उचित इन्तजाम करवा रखा था।घूने गेहूँ और मकई की दलियॉ.छोटे छोटे कटे फूलगोभी के ताजे ताजे पत्ते.चावल के दरदरे .पानी के बर्त्तनों मे गूनगूने नमकीन पानी।काम से फूर्सत मिलते ही मै अपनी सायकल सत्य के घर की दिशा मे दौड़ाया।सत्य के माता पिता ही नही.बल्कि उसके भाई बहन और दूसरे नौकर चाकर भी जाली को घेरे खड़े थे।सत्य घेरे के अन्दर खड़ा एक एक चूज्जे को कुछ खाने को कह रहा था।सभी खड़े खिलखिला रहे थे।सामने की फैन्सिन्ग पर न जाने कहॉ कहॉ के लोग इकठ्ठे होकर सारा नजारा देख रहे थे।
किसे पता था कि इन्ही बीस चूज्जों मे एक बाद के दिनो मे सत्य की अमेरिकन मुर्गी बनने का खिताब पायेगी और उसमे सत्य के प्राण जा बसेंगे।
विलायती चूज्जे थे।जब बड़े हुए तो इन्हे दो रंग मिले।कुछ सफेद हुये.तो कुछ लाल।कुछ मुर्गे हुए तो कुछ मुर्गियॉ।सिर्फ एक मुर्गी को एक अनोखा सा सफेद काला और हल्का भूरा मिश्रित पंख मिला।उसे सत्य से एक नाम भी मिलाःअमेरिकन मुर्गीःएक बेहद खूबसूरत .सूस्त और नकचढी सी मुर्गी.जो बाद के दिनो मे सत्य के दिल की मल्लिका बन बैठी।उसके सुख दुख का भार सत्य ने अपने हॉथों मे ले लिया।बाकियो का ख्याल करन और मोती करने लगे।अपने भाई बहनो को वो अपने फार्म मे घूसने ही नही देता था।कहता था कि ये लोग उन्हे अपने मनोरंजन का साधन समझते है।उन्हे कष्ट देते है और खुद हॅसते हैं।एकबार भी इनमे से कोई जाकर उन्हे सहलाया हो .उनके खाने पीने का बर्त्तन बदला हो!उन्हे पूचकारा हो!पेशेवर शिकारियों की तरह वो उनके पीछे दौड़ते हैं.उन्हे कूचलते हैं।झगड़ता हूँ .तो मॉ से डॉटें सुनता हूँ।अब तो मै ताले लगाता हूँ अपने फार्म मे।चाबीयॉ सिर्फ करन और मोती को दे रखी हैं।
सत्य ने अपनी अमेरिकन मुर्गी का दरबा दूसरों से अलग करवा रखा था।
स्कूल से पहले और स्कूल के बाद सत्य के पास बस यही एक व्यस्तता रह गई थी।कहने सुनाने के नाम पर बस उसकी अमेरिकन रह गई

थी।उसकी सुन्दरता का बखान करते वो अघाता तक न था।
ःभरत!शायद तुम्हे विश्वास नही होगा.पर वो मेरे मन की भाषा पढ लेती है।उसे कुछ कहना ही नही पड़ता है।अक्सर मेरा मन कहता है कि उससे मेरा जन्मजन्मान्तर का रिश्ता है।एक अजीब सा अधूरापन मुझे घेर रखा था.जो वो आते ही दूर कर दी।बड़ी निर्दोष ऑखें हैं उसकी।
एक दिन टिफिन मे मेरे सामने एक पीले रंग का बॉक्स बढाते हुए कहाःजरा इसके सैंडविच खाके बताना कि तुम्हे कैसे लगे!आज मुझे फार्म मे चार अंडे मिले।मेरे फार्म के पहले अंडे।झगड़ा करके दो के आमलेट तुम्हारे लिए बनवाया और दो की अपने लिए।आज सुबह भाई बहनों से जम कर झगड़ा हुआ।मैने उनसे साफ साफ कहा कि मेरे फार्म के पहले अंडे उन्हे मिलेंगे.जिन्होने मेरी मदद की है।पहले मै उन्हे पेट भर आमलेट खिलाऊँगा.फिर देखूँगा कि मुझे अन्डो का क्या करना है!
ःसत्य! तू मुझे एक दिन अपनी मॉ से डंडे खिलवा कर रहेगा
ःमेरे रहते तुम्हे कोई हॉथ नही लगा सकता भरत।हॉ! तुम्हारे और तुम्हारे भईया के बीच मै कभीं नही पड़ूँगा।आज के दिन इस तरह के भाई कहॉ मिलते हैं.जो अपनी पत्नी को अपने मॉ बाप की सेवा मे रख कर अपने भाई को अपनी छोटी सी नौकरी पर ले आते हैं ताकि वो पढ लिख सके।वरना आज तुम भी दूसरे आदिवासियों की तरह चूहों और बगूलों का शिकार करते होते।
एक वो भी दिन था.जब क्लास के कई लड़के मुझे गरीब और अछूत कहके उकसाते थे।मेरे फटे वस्त्रे पर हॅसते थे।मेरे पहनावे का मजाक उड़ाते थे।मुझे ठोकरें मारते थे।गालियॉ देते थे।पर जिस दिन सत्य ने अपनी दोस्ती का हॉथ मेरी ओर बढाया.उस दिन से मजाल है कोई मुझे कुछ कह दे।
कहने को तो उसने शायद ही कभीं किसी पर हॉथ उठाया हो.पर सभी उससे डरते थे।उसके पीछे उसका अपना व्यक्तित्व था.उसका संस्कार था.जिससे सभी घबराते थे।इतनी सी छोटी उम्र मे बिना अपने परिवार या अपनी जाति का नाम लिये वो अपनी एक अलग से पहचान बनाये बैठा था।
जब मैनें खाली डिब्बा धो पोंछ कर उसकी ओर बढाया.तो कहने लगा कि कल से अपना नाश्ता न लाना।तुम्हारे लिए हर रोज घर से आमलेटें बनवा कर लाऊँगा।जब तुम्हारा मन अंडों से भर जायेगा.तब ये डिब्बा तुम्हे भेंट मे दे दूँगा।फिर उसमे तुम अपनी टिफिन लाया करना।आमलेटों से मेरा मन कहॉ से भरता!सत्य को मना मुझे तब करना पड़ा.जब मेरे चेहरे पर तमाम फूॅसियॉ उग आई।भईया कहने लगेःपगले!ये अंडे की गर्मी है।
एक दिन शनिवार की सुबह सत्य अपनी सायकल दौड़ाता मेरे पास आया।सुबह के छ भी नही बजे थे.पर मै जगा हुआ था।खिड़की पर हल्की सी दो नॉक सुनते ही मै बाहर आया।सत्य के हॉथों मे एक अंडा था.जिसे लिये वो नाच रहा था।
ःअमेरिकन मुर्गी की है!
ःहॉ हॉ
सुनते ही मै भी उसके संग नाचने लगा।
अपेक्षाकृत एक बड़ा सा सफेद अंडा.जिस पर थोड़ा सा खून जमा हुआ था।उसमे सनटी एक कोमल सी पंख भी थी।
ःसुबह उठते ही मै उससे मिलने गया था भरत।मुझे वो थोड़ी उद्विग्न सी दिखी।मिलने दरवाजे तक नही आई।पहले तो मै ये सोच कर घबराया कि कहीं उसकी तबीयत तो नासाज नही है।दरवाजा खोल कर अन्दर जाने ही वाला था कि वो एक अंडे देने वाले बक्से की ओर बढी और जा कर उसमे बैठ गई।उसकी स्रवपीड़ा मुझसे देखी नही गई।ऑखें मूँद ली।मै उसके दिये अंडे किसी को खाने नही दूँगा।उसके अंडे सेये जायेंगें।अब मेरे फार्म मे सिर्फ उसी के बच्चे रहेंगे।
ःजरा सम्हाल के हॉथों मे रखना.वरना टूट जायेगाःऔर ये जो पंख है.उसे मै एक माचिस की डिबिया मे सजा कर रखूँगा और जीवनपर्यन्त कलेजे से लगा कर रखूँगा।
गिन गिन कर उसकी अमेरिकन मुर्गी ने चौबीस अन्डे दिये।फिर वो कूडूक हो गई।हममे से किसी को ये पता नही था कि विलायती मुर्गियॉ अपने अन्डे खुद नही सेंती हैं।बड़ी द्विविधा मे सत्य जा घिरा।अब हटिया बाजारों मे उसे एक ऐसी मुर्गी की तलाश थी.जो उसकी अमेरिकन मुर्गी की तरह खूबसूरत हो और कूडूक भी हो।देशी मुर्गियॉ भला कहॉ से विलायती मुर्गियो का सौन्दर्य लाती!
स्कूल के बाद करन को लेकर न जाने कहॉ कहॉ भटकता फिरता था।हीरापुर हटिया से लेकर पुराना बाजार.झरिया से लेकर केन्दूआ करकेन्द.यहॉ तक कि बरवा तक।आखिर मे उसे एक मुर्गी गोविन्दपुर के हाट मे मिल ही गई।उसके पास अमेरिकन मुर्गी की तरह कद और रूप तो नही था.पर वो बड़े प्यार से सत्य के सजाये चौबीस अंडो पर अपने डैने फैला कर जा बैठी।फार्म के इस हिस्से को सत्य ने तार की जालियों से दो हिस्सों मे बॉट रखा था।एक मे उसकी अमेरिकन मुर्गी रहने लगी और दूसरे मे उसके अंडे सेये जाने लगे।
कभीं कभीं स्कूल के बाद सत्य अपनी अमेरिकन मुर्गी को अपने कमरे मे भी ले जाता था और अपने बिस्तर पर एक अखबार बिछा कर उस पर उसे बिठा देता था।वो अपना होमवर्क करता रहता था और वो उसे अपलक निहारती रहती थी।
ःभरत!!जब मै पलट कर उसे देखता हूॅ तो शरमा कर अपनी ऑखें पंखो मे गाड़ लेती है।तुम्हे शायद मेरे कहे का विश्वास नही होगा.पर वो मेरे जूते के फीते खोलने मे भी मेरी मदद करने को आतुर हो जाती है।नकचढी इतनी है कि मुझे देखते ही वो खाने के डिब्बे से दूर हट कर इस बात का इन्तजार करती रहती है कि मै उसके मुँह मे कुछ डालूँ।जब दूसरे उसके करीब जाते हैं.तो घबरा कर अपने दरबे मे घुस जाती है।जब मै उसके करीब जाता हूॅ तब जहॉ होती है.वहीं पसर जाती है।
भरत!एक और चीज तुम्हे दिखाने लाया था।कहके उसने एक माचिस का डिबिया अपनी जेब से निकाल कर मेरी हॉथों मे दे दिया।
जब उसे खोला तो देखा कि उसमे एक गाढे लाल रंग की छोटी सी तोशक बिछी हुई है और उस पर एक पंख लिटा पड़ा है।
ःकल मॉ अपने लिए सिल्क की एक ब्लाउज सिलने बैठी थीं।मेरे कहने पर बचे कपड़ो से ये छोटी सी तोशक सिल दीं।
आठवीं की वार्षिक परीक्षा मे सत्य को अनुमानित अंक तो न मिले.पर वो फिर से सबसे आगे था।मै अपने गान्धी डिविजन से ही खुश था।इम्तहानों मे मुझे सत्य से अलग करके बिठा दिया गया था।

भईया भाभी को धनबाद लिवा लाये थे। अब दोनो वक्त की रसोई उन्ही के हॉथों मे थी। भईया हटिया बाजार करते थे। बर्त्तन वगैरह मै ही मॉजा करता था।
भाभी के आने से ऐसा भी नही था कि मेरा जीवन दूष्कर हो गया हो. पर उनके दिये ताने मुझे बड़े चूभते थे। मै अपने आप को भईया पर एक बोझ सा समझने लगा था। मुझ जैसे अनाथ के भईया ही एकमात्र नाथ थे। अपनी इस उम्र मे मै उन्हे छोड़ कर जाता भी तो कहॉ जाता!
अपना व्यक्तिगत क्षोभ मै सिर्फ सत्य को ही बताता था। सुन कर वो बेहद उदास हो जाता था और कहने लगता था कि लानत है उस हृदय पर. जिसमे तुम जैसे मासूम इन्सान भी नही बसाये जा सकते। एक दिन तुम्हारी भाभी इस बात को लेकर बहुत पछतायेंगी।
बाईसवें दिन अमेरिकन मुर्गी के सारे अन्डे फूटने को आये। देखते ही देखते सारा डिब्बा चूज्जों से जा भरा। बड़ी सावधानी से एक एक को निकाल कर सत्य जमीन पर लाया. जहॉ पहले से ही लकड़ी का बूरादा बिछा पड़ा था। उस पर चावल के कण छिंटे हुए थे। उनकी मॉ उनके संग चारा चूगने लगी और सत्य की अमेरिकन उन्हे अपलक निहारने लगी।
ःभरत! मेरी अमेरिकन चौबीस बच्चों की मॉ है फिर भी देखने मे कुॅवारी लगती है। उसके पास मदर मारिया की तरह एक अक्षूत सुन्दरता है।
कुछ ही दिन गूजरे होंगे। गलती से इस दरबे का दरवाजा खुला रह गया। न जाने कहॉ इन सारे चूज्जों को लेकर उनकी मॉ गायब हो गई। करन मोती को दोषी ठहराता रहा और मोती करन को। सत्य पर तो एक कहर ही टूट पड़ी थी। करन और मोती को लेकर आस पड़ोस के जन्गल छानता रहा। चूज्जो का कोई सूराग नही मिला। पास वाले जन्गल मे जन्गली बिलाव सियार तो रहते ही थे. एक बूढा अन्धा अजगर भी रहता था। अपनी सॉसो से बड़े बड़े जानवर तक खींच लेता था। लगातार दो दिनो तक सत्य इन चूज्जों को तलाशता रहा. पर उसे उनका एक पंख तक नही मिला। पुटूस की खरोचों से उसके हॉथ पैर भर चले थे। उसे सॉप बिच्छूओं का भी डर न था।
जब वो अपनी उदास अमेरिकन को देखता था. तो उसके ऑख डबडबाने को आते थे।
बारहवें दिन धईया का एक लड़का एक मरी मुर्गी लिए सत्य के घर आया। अमेरिकन के अंडों को सेने वाली मुर्गी के गले मे कोई जानवर अपने दॉत गाड़ गया था। अब खोये चूज्जों को पाने की कोई आस न बची थी कि दूसरे दिन ये सारे चूजे फार्म के सामने टहलते नज़र आये। सत्य को अपनी ऑखों पर विश्वास ही नही हुआ। चिल्ला चिल्ला कर उसने अपना गला तक बिठा लिया था। सारे चज़्जे आराम से छोटे मोटे कीड़े चूगे जा रहे थे।
ःभरत! मेरी अमेरिकन ने फिर से अंडे देने शुरू कर दिये है। मुझे सिर्फ एक बात का दुख है कि उसने चौबीस बच्चे जने. पर अपना रंग और अपनी खूबसूरती अपने बच्चों के बीच नही बॉटी।
रेलगाड़ी की बोगियों की तरह उसके फार्म मे भी तीन तरह की बोगियॉ थीं। फर्स्टक्लास मे उसकी अमेरिकन रहती थी और उसके अंडे सेये जाते थे। सेकेन्डक्लास मे विलायती मुर्गे मुर्गियॉ रहते थे। थर्डक्लास मे अमेरिकन मुर्गी के अंडे सेने के लिए उसने कुछ देशी मुर्गियॉ पाल रखी थीं।
फर्स्टक्लास की देखभाल वो खुद करता था। बाकियों की देखभाल उसी की कमान्डरी मे करन और मोती करते थे। उसकी अमेरिकन दूसरों की तरह घूने गेहूॅ या टूटे चावल नही चूगती थी। सत्य उसे बासमती या फिर गोबीनभोग के चावल चूगवाता था।
दास बाबू बनर्जी बाबू यासीन सोना राम करन मोती मिसिर अक्लू या ऐसे कई नाम जो उसकी फार्म से जूड़े हुए थे. उन्हे वो मूफ्त मे अंडे या मुर्गे दे दिया करता था. पर अपनी मॉ से वो इनकी एवज मे पैसे वसूलता था।
ःभरत! मेरी फार्म के अपने खर्चे हैं। उसे मै अपने जेबखर्च से नही ढॅक सकता। बाजार मे एक अन्डे चार आने के आते हैं। एक ताजा मुर्गा मोल भाव के बाद भी दस रूपये पर निपट पाता है। अगर मै अपनी मॉ से एक अन्डे का एक आना और एक मुर्गे का मात्र दो रूपया लेता हूॅ तो क्या बुरा करता हूॅ!
ःफिर दूसरों को मूफ्त मे क्यों देते हो!
ःदूसरे कौन! तुम जिनके नाम ले रहे हो. उनसे मै पैसे लूॅ और कृतघ्न कहलाऊॅ!! उनके बगैर मेरा सपना कभीं साकार नही होता। भरत! मै तुम्हारा भी एहसान जीवन भर नही भूलूॅगा।
दूसरी खेप मे उसकी अमेरिकन मुर्गी के एकाध चूज्जे ठंढ के दिनो मे धनबाद की सर्दी न झेल पाये। चूने के रंग का पाखाना किये और अपनी गर्दन टेंढी कर लिये। सत्य भागा और बैटनरी डाक्टर से न जाने कौन सी दवा ले आया। जे डी कुमार के यहॉ से एक सिरिंज भी खरीद लाया। एक एक मुर्गी और मुर्गे को पकड़वा कर उनके डैनो मे इंजेक्शन भोंक मारा। उसके पिताजी के एक अनन्य मित्र तो उसे डाक्टर साहब कहके बुलाने लगे थे। खुद शाकाहारी थे. पर सत्य के फार्म की भूरी भूरी प्रशंशा करते थे।
जब हम दसवीं कक्षा मे आये तब सत्य के फार्म मे नही भी तो दो सौ मुर्गे मुर्गियॉ रहे होंगे। सत्य की पढाई सुचारू रूप से चल रही थी। आठवीं कक्षा मे हल्का सा वो लड़खड़ाया तो था. पर फिर से उसने अपने आप को सम्हाल लिया था।
एक दिन रात को न जाने कैसे एक बनबिलाव तार की जालियों को तोड़ कर अमेरिकन मुर्गी के दरबे मे घूस आया। बड़ा हो हल्ला मचा। सामने धईया गेट की गुमटी मे बैठा चौकीदार फाटक लॉघ कर सत्य के फार्म पर आया। अपनी लाठी से डरा धमका कर उसने बिलाव को भगा तो दिया था. पर जब सत्य अपने पिता के साथ टार्च लिये फार्म पर आया. तो देखा कि उसकी अमेरिकन बेसुध जमीन पर गिरी पड़ी है। पूरे दरबे मे उसके पंख बिखरे पड़े हैं। समेट कर वो उसे उठाया और अपने कमरे मे ले आया। लहू लुहान को अपने पढने की मेज पर लिटाया। उसका एक डैना बीच से टूट गया था। दूसरा सलामत था। उसकी अमेरिकन मुर्गी हल्की हल्की सॉसे ले रही थी। सत्य उसके उपचार मे जा लगा। घर के दूसरे लोग फिर से सोने चले गये. पर उसके पिताजी कमरे मे ही बैठे रहे। सत्य झटपट न जाने कहॉ से दो पतली डालियॉ काट लाया! पहले वो उन्हे छोटे छोटे टुकड़ों मे काटा फिर दस टुकड़े डैने के ऊपर और दस नीचे की ओर लगा कर उस पर टेप सटाया। ऊपर और नीचे ढेर सारा पैन्सलीन पोत कर उस पर बैन्डेज कर दिया। उसके पिताजी उसे असिस्ट करते रहे। सुबह के चार बजे तक ये ऑपरेशन चला।

दूसरे दिन स्कूल के रास्ते उससे कुछ बोला ही नही जा रहा था।बोलने से पहले ही उसकी ऑखे बरसने लगती थीं।
ःभरत! सारी रात उसकी बगल मे बैठा रहा।आज स्कूल आने का मन ही नही कर रहा था।मॉ की वजह से आना पड़ गया।मेरा अगर वश चले तो उस बिलाव को मै गोलियों से भून डालूॅ।उस कमीने को दूसरे नही मिले!उसे एकदम से घायल कर दिया है।समय से अगर वहॉ दुक्खु न पहुॅच गया होता तो वो उसे मार ही डाला होता।
क्लास के बाद सत्य के घर गया.तो देखा कि उसकी अमेरिकन मुर्गी एक बेंत के बड़े से टोकरी मे बेसुध लेटी पड़ी है.पर उसकी सॉसे अभीं भी चल रही हैं।जब हल्के से सत्य उसे सहलाया.तो वो अपनी मूॅदी पलकें खोली और फिर से मूॅद लीं।सत्य उसे अनवरत देखे जा रहा था.रोये जा रहा था।उसे अपने बहते नाकों की भी कोई फिक्र नही थी।
मेरी ऑखों के सामने यकायक अपनी बड़ी दीदी की मौत जीवन्त हो उठी।उन्हे हैजा हुआ था और वो मृत्यू शैया पर जा गिरी थीं.तब मै बहुत गिड़गिड़ाया था भगवान के सामने।मेरी एक भी फरियाद वो नही सुने और दीदी को मुझसे छीन लिये।रह रह कर सत्य ही मुझे कोमल बना देता था.वरना मै मन से बिल्कूल कठोर और नास्तिक हो चला था।सत्य को रोते देख कर मै भी रोने लग पड़ा और अपनी वो फरियाद जो मैने दीदी के लिए की थी.फिर से सत्य की अमेरिकन के लिए दुहराने लगाः
भरत!आज सुबह इसे सायकल की डोलची मे बिठा कर बैटनरी अस्पताल दिखाने ले गया था।साला डाक्टर कहने लगा कि काट छॉट कर खा जाओ यार।अभी जिन्दा है।लुढक गई तो हॉथ मसलते रह जाओगे।पिताजी का ख्याल आ गया.वरना साले पर उसके मेज पर रखा पेपर वेट फेंक कर आया होता।
सत्य की अमेरिकन मुर्गी दस दिन उसके कमरे मे रही और स्वास्थ्यलाभ करती रही।ग्यारहवें दिन जब सत्य ने उसका बैन्डेज खोला और लकड़ी की फकटियों को उसके डैने से अलग किया.तो वो अपने दौनो डैने फैलाई और एक घेरे मे मिनटों नाचती रही।
ःभरत!देख कर विश्वास ही नही हुआ।जख्म का कोई नामो निशॉ ही नही बचा उसके बदन पर।पकड़ने को आगे बढा.तो मुझसे ही ऑख मिचौली खेलने लग पड़ी।कभीं इधर कभीं उधर।कभीं मेज पर तो कभीं ताखे पर।बड़ी मुश्किल से गोद मे आई।भलाई का कोई जमाना ही नही रह गया.कहके सत्य खिलखिला कर हॅसने लग पड़ा।
इस झटके से सत्य उभरा ही था कि फिर से एक चोर उसकी अमेरिक मुर्गी के दरबे मे घूस आया।वो बिलाव नही था.बल्कि एक मोची था।ओल्ड हॉस्टल के सामने लगे बरगद के नीचे लोगों के जूते सिला करता था और दुक्खु का चचेरा भाई था।उसे भी दुक्खु ने ही पकड़ा।साला नामवर मुर्गीचोर था।सत्य की मॉ के मना करने के बावजूद उसके पिता उसकी पीठ पर दो घन की तरह मूक्के बरसाये।सामने के विशाल महुए के पेंड़ की एक ऊॅची सी डाल से एक दो सौ वाट का बल्ब भी लटकवाये जिसकी तमाम रोशनी सत्य के फार्म पर गिरती थी।
फिर भी सत्य अपनी अमेरिकन को अपने कमरे मे लिवा लाया।मॉ से झगड़ा करके अपने कमरे के एक कोने मे जाली का एक घेरा भी बनवा डाला।जब वो अपने कमरे मे होता था.तब वो उसके बिस्तर के पायताने बैठती थी।जब वो घर पर नही होता था.तब वो अपने घेरे मे रहती थी।सत्य उसके लिए कॉसे की एक थाली और कटोरी भी खरीद लाया था।उसकी थाली मे अपने खाने की रोटी और चावल डाल देता था।कटोरी मे उसे पीने के लिए दूध मिलते थे।जब तब वो एक राजकुमारी की तरह घूमने फिरने के लिए सत्य का कमरा छोड़ कर बाहर बरामदे मे आती थी।खुले रसोई मे खाने के तमाम सामान बिखरे पड़े रहते थे.पर वो रसोई मे हल्के से झॉक कर फिर ऑगन मे कूद जाती थी।सत्य के मन की मल्लिका भला ओछी हरकतें क्यों करती!यही नही.बल्कि टट्टी पाखाने भी वो घर के पीछे के बगान मे कर आती थी।
सत्य को उससे सिर्फ एक ही शिकायत रहती थी।इन दो वर्षो मे वो न जाने कितने बच्चे जनी.पर अपना सौन्दर्य अपने बच्चों मे एक बार भी नही बॉटी।दरअसल वो सत्य का प्यार किसी के संग बॉटना ही नही चाहती थी।उसके दिल पर अकेले हूकूमत करना चाहती थी।
ग्यारहवीं कक्षा की छमाही तक सत्य हमारी कक्षा का सिरमौर रहा।
ऐसे ही एक बुद्धवार की मनहूस सुबह थी।करन मुझे ये बताने आया था कि सत्य की अमेरिकन मुर्गी हम सबसे विदा ले चुकी है।मेरे प्राण मेरे गले मे जा ॲटके थे।धम्म से घर के सामने बने सीढी पर घहर गया।मेरे मन पर न जाने कहॉ से हजारों मन वजन आ पड़ा।मेरी सॉसे भारी हो गई।मेरे पॉव शिथिल हो गये।
सत्य अपने बगान के एक कम्पोस्ट मे एक बड़ा सा गढा खोद कर उसमे अपने अमेरिकन मुर्गी की लाश दफन करने जा रहा था।घेरा बनाये वहॉ बीसों लोग खड़े थे।उनमे कई उदास थे तो कई मुस्करा भी रहे थे।
इसके बाद कई दिनों वो स्कूल नही आया।अपनी अमेरिकन के गम मे बीमार भी पड़ गया।बार बार मेरा दिल मुझसे कहता था कि अब सत्य कोई न कोई ड्रामा करेगा।लगभग सम्हलता सत्य दुबारा डगमगाने की कगार पर खड़ा था।
ःभरत!जीवन मरन तो लगा ही रहता है।जो आता है एक दिन चला जाता है।मिलन और विदाई तो हर दिन का खेल है।इन बातों को जानते हुए भी मुझे अपनी अमेरिकन मुर्गी के खो देने का अकूत दर्द है.जिसे कोई समझना ही नही चाहता।खास करके मॉ।वो नही जानती कि मै विदाईयों के लिए बना ही नही हूॅ।ऐसे क्षण मुझे मेरी हर उम्र मे तोड़ा करेंगें।
वो फिर से बेहद चूप रहने लगा और अपनी किताबों की दुनिया मे खो गया।मॉ के दबाव के कारण वो स्कूल तो आता था.पर पढाई लिखाई के प्रति उसका कोई रूझान नही रह गया था।कभी कभीं वो पिरियड के दरम्यान ही क्लास छोड़ कर न जाने कहॉ चला जाता था!फिर दिन भर यहॉ वहॉ भटकता रहता था।मॉ और बेटे का कलह दिन ब दिन बढता ही जा रहा था।अब शाम को भी वो घर से गायब रहने लगा।उसकी मॉ मुझे बुलवा भेजती थी.फिर मुझे सत्य की खोज मे निकलना पड़ता था।सारा धनबाद छानना पड़ जाता था।कभीं वो इसके घर बैठा मिलता था तो कभीं उसके घर।कुछ कहने पर मुझसे झगड़ बैठता था।उसके संग सोहवत की सभी को आजादी थी।उसे बस तथाकथित श्रवणकुमार सरीखे आज्ञाकारी लड़को से नफरत रहती थी।कहा करता था कि तुम देख लेना भरत!ये जरखरीद.जो आज के दिनो मे अपने मॉ बाप की गुलामी कर रहे हैं.बाद के दिनो मे न अपने मॉ बाप के सगे होंगे और न देश समाज के।अपनी बीवीयों की गुलामी करेंगें ये कमीने।वरना धनबाद के एक से एक गिरहकट.चोर अवारे ब्लैकमार्केटियर और फेलियर देखते

ही देखते उसके दोस्त बन चले थे। उनकी सोहवत मे उसे अब सिगरटों और जर्दा पान खाने की भी लत लग गई थी। इनसे उनसे खैनी भी मॉग कर खाने लगा था। सुबह उठ कर सूर्ती के गूल से दॉतें साफ करता था। एक हल्का फूल्का नशा उसके जीवन के लिए आवश्यक सा हो गया था। शायद ही ऐसा कोई कूऐब और बदचलनी उससे बची रह गई हो। अगर गलती से उसकी मॉ अपने गोदरेज की चावी कहीं भूल जाती थीं. तो वो बिना उनसे पूछे उनकी आलमारी से पैसे भी चुरा लेता था। उसे कपड़ों की कौन सी कमी थी. फिर भी दिन भर एक फटा चिटा कुर्त्ता पैजामा पहने देवदास की तरह घूमता फिरता था। आवारगी का शायद ही कोई लक्षण रहा होगा. जो उससे बचा हो।

अपने फार्म से भी उसे कोई खास लगाव नही रहा। करन और मोती भी कब तक उसका फार्म सम्हालते!अन्डे दिन ब दिन कम होते चले गये। कुछ खास मेहमानों की सेवा मे उसके मॉ के कहने पर करन कोई मुर्गा पकड़ लाता था और उसे साफ सूफ करके रसोई मे दे आता था। बीमार मुर्गे मुर्गियों को सोना राम आकर ले जाता था।

सत्य के अहाते के इस कोने मे कभीं एक चहकता सा जीवन होता था जो अब बीरान हो चला था। घेरे की जालियॉ कई जगहों से टूट चली थीं। सॉपों और चूहों के कई बील खुल चले थे। जहॉ देखो वहीं चिटियों की फौजें नजर आती थी। जो दो चार मुर्गे और मुर्गियॉ बची थीं. फार्म के बाहर चरती फिरती रहती थीं। कई तो अहाते के बाहर वाली सड़क पर मोटरों के नीचे भी आ गई थीं।

आए दिन उसकी मॉ अमेरिकन मुर्गी के ताने देकर उसे जुलाहा निकम्मा आवारा कहा करती थीं। इनके उनके लड़को का हवाला देकर अपनी तकदीर को कोसती थीं। उस पर सैकड़ों प्रतिबन्ध लगाती थीं। उसके अपने भाई बहन उसकी खिल्ली उड़ाते थे। साहित्य के प्रति सत्य को बचपन से ही लगाव रहा। उसे कला के विषय अच्छे लगते थे। उस पर उसकी मॉ ने जर्बदस्ती साईन्स के विषय लाद रखे थे। चोरी छुपे वो कवितायें और छोटी मोटी कहानियॉ भी लिखने लगा था। वो भी कभीं उसकी मॉ के हॉथों लग गया। बिना सोचे समझे वो सबका सब चूल्हे माई को भेंट मे चढा डालीं। बड़ा जम कर झगड़ा हुआ। एक एक करके उसकी मॉ ने उसके सारे अवगुण उसे सबके सामने सुना डाले. जो उसे आवारा करार देने के लिए काफी थे। पढाई लिखाई छोड़ कर इस उम्र मे कहानी कवितायें लिखना भी सत्य की मॉ की नजरों मे एक घोर अवगुण ही था। झन्नाया मेरे पास आया था।

ःभरत!जब मॉ ही मुझे आवारा करार दे चुकी हैं. तब लोगों की नजरों की मुझे कौन सी परवाह!मुझे कोल्हू का बैल समझती है। उनकी बताई परिधि मे आजीवन ऑखें बन्द किये चलता रहूँ। मै उनका जरखरीद कुत्ता भी तो नही हूँ कि उनके कहने पर उठ्ठक बैठक करता रहूँ। पढाई लिखाई के विषयों मे ऐसा भी समझने के लिए क्या रखा है! सबकुछ छोड़ कर बस इस पढाई को ही पूजता रहूँ!जब देखो तब मुझे एक पथरीले रास्ते पर खींच लाती हैं जिस पर दो कदम चलते ही मेरे पॉव लहु लुहान हो जाते हैं। सपनो और कल्पनाओं के संसार से न जाने वो क्यों चिढती हैं!मॉ और बेटे के बीच का सम्बन्ध उन उदाहरणों और आदर्शो से कायम नही रह सकता. जो हम पर थोपी गई है। समझने और समझाने की नाद मे ही एक मॉ छुपी है और वहीं उसका बेटा भी छुपा है।

ःकल सुबह मै सबसे पहले उस कोने को साफ करवाऊँगा. जहॉ मेरा फार्म है। फिर गई रात कहीं दूर चला जाऊँगा।

ःपर कहॉ!

ःजहॉ मुझे अपने अमेरिकन की याद न आये। पर तुम किसी को भी इसके बारे मे नही बताओगे।

ःतुम्हारा दिमाग तो ठीक है न!हायर सेकेन्ड्री का फाईनल हमारे सर पर आ चुका है। तुम अपनी मॉ को ऐसी सजा नही दे सकते। कौन मॉ अपने बेटे को भला बुरा नही कहती!मै तुम्हे अपनी दोस्ती का हवाला देता हूँ। ऐसे कदम न लो। तुम्हारे माता पिता बिल्कूल टूट जायेंगे।

अपना सर झुकाये वो मुझे बिना हॉ ना किये सुनता रहा. फिर उठ कर चल दिया।

दूसरे दिन सुबह सोना राम दो मजदूरों के साथ उसके घर आया और उसका फार्म देखते ही देखते सपाट कर डाला। फार्म के ईंटें और दूसरी चीजें उठा कर अपने घर ले गया। आठ दस मुर्गे मुर्गियॉ जो बचे थे. उन्हे भी सत्य उनके बीच बॉट दिया।

तीसरे दिन सुबह ही सुबह मेरा बुलावा आया। उसकी मॉ रो रोकर अपना बुरा हाल कर ली थीं। सत्य के पिताजी और उसके भाई बहन नौकर चाकर भी उदास खड़े मेरे कुछ कहने का इन्तजार कर रहे थे।

ःतुमसे तो सत्य अपना कुछ नही छुपाता है भरत। रात मे किसके घर पर रूक गया होगा!हमे खबर ही कर दिया होता। अचानक सत्य के पिताजी की आवाज भर्राने को आई। मुझे उन पर बड़ी दया आई।

ःसर!इसकी मुझे कोई जानकारी नही है. फिर भी जा कर पता करता हूँ। आप हौसला रखें।

पहली बार मुझे सत्य पर बेहद गुस्सा आया। न जाने अपने को क्या समझे बैठा है। वो गलतियों पर गलतियॉ करता रहे और सभी चुपचाप बैठे उसे झेलते रहें। इतनी कम उम्र मे जनाब को आजादी ही आजादी चाहिये थी।

जब उसके पिताजी नहा धोकर काम पर जाने को हुए. तो उन्हे अपनी मेज पर चाबियों के गुच्छे से दबा सत्य का लिखा एक पत्र मिलाः

ःपूज्यनीय पिताजी!

मै कुछ दिनो के लिए घर छोड़ कर जा रहा हूँ। मन स्थिर होते ही वापस आ जाऊँगा।

उसके पिताजी तो सन्न रह गये. पर उसके मॉ की प्रतिक्रिया कुछ इस तरह की थीःऐसी वो कौन सी आवारागर्दी करने के लिए बची है जिसके लिए उसे घर छोड़ना पड़ गया!नाक मे दम कर रखा है ये लड़का। जग समाज मे ये हमारी नाक कटवा करके रहेगा। लोग सुनेगे तो क्या कहेंगे!

सत्य को घर छोड़े तीन दिन हो चले थे। एक दिन फिर मुझे उसके पिताजी बुलवा भेजे।

ःसत्य ने हमसे तो कोई पैसे नही लिए। उसे पैसे तुमने तो नही दिये है!

ःनही सर!मै कहॉ से देता। मेरी हालत तो आप जानते ही हैं।

ःन जाने कहॉ कहॉ भटक रहा है ये लड़का!कपड़े लत्ते भी साथ नही ले गया है। पता नही बिना पैसों के वो कैसे तीन दिन गुजार ले गया! अक्सर उसके माता पिता आकर अपने घर के गेट पर खड़े हो जाते थे। ओल्ड हॉस्टल के दाहिनी तरफ जो भी रिकसा मुड़ता था उन्हे ऐसा लगता था. जैसे सत्य उसमे बैठा हो।

देखते ही देखते सत्य को घर छोड़े डेढ महीने होने को आये।
हायर सेकेन्ड्री के फाईनल का डेट अनाउन्स हो चुका था।जो लड़के पढने मे थोड़े कमजोर थे,उनके लिए स्कूल के बाद अतिरिक्त कक्षाये भी लगने लगी थीं।सत्य का चेहरा अहर्निश ऑखों के सामने नाचता रहता था।पढाई मे मन भी लगाता तो कैसे!सत्य की मेरे प्रति उदारता और उसके व्यक्तित्व के कई प्रबल पक्ष मेरे मन को इस कदर मोह गये थे कि मै उसे अपनी यादों से परे ही नही कर पाता था।
एक दिन दीपा दी पूछने लगीं
ःपिछले दिनो सत्य नज़र नही आता!तुम्हारा उससे कोई झगड़ा तो नही चल रहा है!
ःमेरा उससे कौन सा झगड़ा होना है दीपा दी!मुझ जैसे गरीब को उसने अपना स्नेह दिया।उससे झगडूँगा तो सीधे नरक मे जाऊँगा।
ःफिर वो तुमसे मिलने क्यो नही आता!
ःपरीक्षा नजदीक आ गई है।उसकी तैयारियो मे जी जान से लगा हुआ है।
हूँ !कहके दीपा दी अपनी रसोई मे चली गई और मै कमरों की सफाई मे जा लगा।
थोड़ी देर मे मुझे आवाज लगाईःनाश्ता तैयार है।आके थोड़ा नाश्ता तो कर लो।
जब मै रसोई घर मे गया तो देखा कि दीपा दी अपनी नजरें झुकाये बैठी हैं।इशारे से ही मुझे बैठने को कहीं और धीरे धीरे अपनी चाय पीने लगीं।
मुझे कुछ शंका सी हुई।पूछा तो पता चला कि सत्य बिना किसी को कुछ बताये उनके पति से उनके ऑफिस मे जाके दो सप्ताह की मूहलत पर पॉच सौ रूपये मॉग लाया है।
ःतुम्हारे दादा सत्य से सख्त नाराज हैं।वो आज शाम को उसके घर जाने वाले हैं।झूठ से तुम्हारे दादा को सख्त नफरत है।
मुझे काटो तो खून नही।हॉथ का कौर हॉथ मे ही धरा रह गया।कैसे रोकूँ दादा को सत्य के घर जाने से।मै भला इतने रूपये कहॉ से पैदा करता।मुझ जैसे गरीब को भला कौन कर्ज देता!
पलट कर दीपा दी के पैर पकड़ लियाःदादा को सत्य के घर जाने से मना कर दें।आजीवन आप लोगों की सेवा करूँगा।बदले मे मै आप लोगों से एक कौड़ी भी नही लूँगा।
मेरी प्रार्थना नही सुनी गई।मेरे मना करने के बावजूद दादा सत्य के घर गये।पॉच सौ रूपये के लिए वो सत्य को उसके माता पिता के सामने जितना जलील कर सकते थे किये और अपना रूपया वापस ले आये।
दूसरे दिन जब मै दादा के घर गया तो वो मुझसे कहने लगे कि मै गलत सोहबत मे पड़ गया हूँ।सत्य मुझे सिर्फ मुसीबतों मे ही डालेगा।एक नम्बर का जाली लड़का है वो।अपमान से मेरा पूरा शरीर ही कॉपने लग पड़ा।
ःदादा!आप सत्य को अच्छी तरह जानते नही है।वरना उसके खिलाफ ऐसी बातें नही करते।आप को अपने पैसे वापस मिल गये है फिर सत्य का अपमान क्यों करते हैं!
ःतुम दो कौड़ी का छोकरा!मेरा मुँह बन्द करना चाहता है!तुम्हारे जैसे अछूत को घोर मे घूसने दिया।खाना दिया कोपड़ा दिया और तुम हमारे मुँह लोगता है!
ःदादा!यही फर्क है आप जैसे लोगों मे और सत्य मे।आप लोग मतलबपरस्त हैं।अपने मतलब के लिए एक अछूत को भी अपना बना लेते है।आपलोग अपनी पूर्वाग्रहों से कभी बाहर नही आ पायेंगे।एक कुँए के मेढक हैं आप,कहके मै वापस चला आया।दादा और दीपा दी के दिये तमाम भेंट,जो अभीं भी नये पैक्ड पड़े थे,उनके दरवाजे पर रख आया।इस दिन के बाद मै दुबारा दादा के घर नही गया,पर दादा पूरे मूहल्ले को सत्य की ये करतूत सुना मारे।भईया को भी पता चला।वो मुझसे कुछ कहे तो नही,पर उनकी ऑखों मे भी सत्य के प्रति हिकारत आ गई थी।
सत्य की अनुपस्थिति मे धनबाद के कई कर्जदार उसके पिताजी से अपने सत्य को दिये रूपये वापस ले आये।सत्य को कोई ना नही करता था,पर सत्य भी किसी को ना नही करता था।रूपये उधार मे लेकर दान मे लुटाता था और अपने पिताजी के अर्जित सम्मान से खेलता था।धनबाद के कई दूकानों मे उसके उधारखाते भी चलते थे।जिसे देखो,उसे ही वो इन दूकानों से कुछ न कुछ दिलवा दिया करता था।
सत्य अक्सर ये भी कहा करता था कि भरत!मेरे मन से जो रास्ते फूट कर दूसरे तीसरे या फिर अनेकों मनों तक जाते हैं,उन पर मै कोई बैरियर नही देखना चाहता।मै ऐसी हर दीवार को गिरा कर ही दम लूँगा जो किसी एक व्यक्ति को एक व्यक्ति से अलग करता है।
मेरा ये दानवीर कर्ण विश्वभ्रमण करके तीन महीनों के बाद जटा जूट बढाये अपने घर वापस आया और अपने मॉ के सामने ऑगन मे गिर कर ढेर हो गया।न जाने वो कितने दिनो से न तो नहाया था और न ही कुछ खाया था।ऊपर से उसका ज्वर भी बड़ा तेज था।
झटपट करन की मदद से उसकी मॉ उसे अपने कमरे मे लिवा ले गई।उसके कपड़े बदलवाई।मोती डाक्टर मिश्रा को लिवाने भागा और करन उसके पिताजी को।मुझे उसके आने की खबर अकलू से मिली।
ःसत्य बाबू वापस आ गये है,पर सुना है कि बेहद बीमार हैं।
सुनते ही सत्य के घर भागा।सो रहा था।उसे समेट कर उठाया और उठा कर गले से लगा लिया।सूख कर कॉटा हो चला था।बिना सहारे के उठ ही नही पाता था।
वो थोड़ा चलने फिरने के काबिल हुआ ही था कि हायर सेकेन्ड्री का फाईनल हमारे सिर पर था।पिछले सालों के अंको के आधार पर उसे बिना किसी टेस्ट के फाईनल मे बैठने की अनुमति मिल गई।उसके पास इम्तहान की तैयारियों के लिए कुछ ज्यादे समय नही बचा था,फिर भी वो अपनी पूरी ताकत लगा कर तैयारियों मे जा लगा।न तो वो रात को रात समझा और न दिन को दिन।
हायर सेकेन्ड्री के फाईनल मे इक्कीस अंको की वजह से उसका फर्स्टडिविजन नही आ पाया।मेरा थर्ड डिविजन आया था।हमारी कक्षा के पॉच लड़कों को फर्स्टडिविजन मिला था।इसी वर्ष बिहार मे इन्टरमिडिएट का प्रावधान आया।उसके माता पिता नही चाहते थे कि वो इन्टरमिडिएट धनबाद से करे।उसे वो पटना भेज दिये।

पिछले सतरह वर्षो मे सत्य नाम का पौधा धनबाद की पथरीली भूमि मे अपनी जड़ें बड़ी गहराई तक ले जा चुका था और अब एक विशाल पेंड़ बन चुका था।जब उसे उखाड़ने की बात आई, तो उसके आस पड़ोस की जमीने भहराने को आई।उन जमीनों मे कई पौधे ऐसे भी थे, जो उससे अपना पोषण पा रहे थे।मुझ जैसे न जाने धनबाद मे कितने लड़के थे, जिन्हे उसने अपना प्यार और सामीप्य दे रखा था।हमारे बीच वो आत्मविश्वास और स्वनिर्भरता बॉटा करता था।संकोच और भय का जो जंगल हमारे इर्द गिर्द फैला हुआ था, उसे काटा करता था।

धनबाद से उसकी ट्रेन सुबह छ बजे की थी।शायद आप मेरा विश्वास नही करेंगे।स्टेशन पर उसे छोड़ने नही भी तो उसके दो सौ साथी आये होंगे।शायद ही ऐसा कोई रहा होगा, जिसे सत्य न रूला रहा हो।विदाई के वक्त मुझसे कहने लगाः भरत!बस अपने शरीर से ही मै तुमसे दूर जा रहा हॅू।अपनी आत्मा मै तुम्हारे पास छोड़े जा रहा हॅू।मेरी गलतियों को अपने चित्त पर न धरना।तुम्हे मैने बहुत दुख दिया।

मेरी ऑखों मे जैसे ऑसुओं का सोता ही फूट पड़ा।

जब उसकी ट्रेन चलने को हुई, तो कई बिना अपनी जान की परवाह किये खिड़कियों के सिंकचे थामे प्लेटफार्म पर दौड़ने लग पड़ेःःः

प्रमोद कुमार सिंह